काशी की सांस्कृतिक गरिमा के पोषण में काशिराज-वंश का योगदान

प्राचीन ग्रन्थों के अवलोकन से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि पौराणिक काल, महाभारतकाल, रामायणकाल से लेकर मुगल साम्राज्य के बाद के काल तक आते-आते देश में अनेक स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हो चुकी थी, जहाँ के शासक अपनी निजी शैली से अपनी प्रजा के ऊपर कही क्रूरता, कहीं चतुराई, कहीं शौर्यबल, कहीं सहज उदारता और कहीं-कहीं अनेक नैतिक-चरित्रबल, धार्मिक निष्ठा, आस्था, सहिष्णुता, कलाप्रेम आदि मानवीय गुणों के द्वारा शासन सूत्र-संचालन कर रहे थे। काशी नगरी इस मायने में विशेष भाग्यशाली रही, कि शआसन-सूत्र-संचालन के लिए काशिराजवंश के जिन नरेशों को कुल के वरिष्टताक्रम में समय-समय पर शासनरूढ़ किया गया, उन सभी के अवध के नवाब के शआसन के अन्तर्गत रहते हुए भी अनेक उतार-चढ़ाव झेलने के बावजूद अपनी गुण ग्राइकता और सुरूचि से अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संगीत आदि अनेक कलाओं से काशई नगरी को जुड़े रखने में अपना अविसमरणीय योगदान दिया, कभी

टूटने नहीं दिया। धर्म-दर्शन, साहित्य, काव्य, भाषा, नाट्य, अभिनय, शास्त्र प्रणयन, संगीत इत्यादि अनेक कलाओं के उननमन एवं विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हुए त्रैलोक्य से न्यारी इस काशी नगरी की जीवन्तता बनायें रखने के साथ-साथ इसकी सांस्कृतिक-गरिमा भी इन सभी नरेशों ने अपने आदर्श शासनकाल में बढ़ाई। शआसन के उचित प्रोत्साहन से जनसामान्य भी विभिन्न कलाओं की बारीकियों से परिचित हुआ और अपनी-अपनी विशेष रूचि के अनुसार राजा से लेकर प्रजा तक में एक उत्कृष्ट जीवन शैली एवं सांस्कृतिक चेतना-सूत्र की आविच्छिन्न-श्रंखला का निर्माण हुआ। इस परिपेक्ष्य में काशिराज वंश की स्थापना एवं उनके द्वारा प्रदत्त उचित प्रोत्साहन, सहयोग एवं योगदान के इतिहास को जानना आवश्यक है।

मनमानस- काशिराज वंश की स्थापना आज से लगभग तीन सौ वर्षों पूर्व हुई थी। गोतम-गोत्री-भूमिहार ब्राह्मण वंश में उत्पन्न श्री कृष्ण मिश्र नामक तपस्वी ब्राह्मण की दो पत्नियों से एक-एक देव शर्मा और राम शर्मा हुए। इस वंश का मूल निवास स्थान प्राचीन दातृपुर ग्राम, वर्तमान गंगापुर ग्राम (काशी से पश्चिम लगभग २० मील) के पास का दतरिया गाँव हैं। वंश के ज्येष्ठ पुत्र देश शर्मा शास्त्र-धर्म के अध्ययन, अवलम्बन के पश्चात् अन्यत्र प्रस्थान कर गए, किन्तु कनिष्ठ राम शर्मा ने यहीं रहकर शास्त्र और शस्त्र दोनों में ही निपुणता प्राप्त की और भवनों द्वारा उत्पीड़ित आस-पास के भूखण्डों पर आधिपत्य जमाकर शासन करने लगे। धीरे-धीरे वंशवेलि विस्तृत होती गई जिसकी दूर की वंश परम्परा में मनुरंजन नामक प्रतापशाली वंशज के चार पुत्रों में ज्यष्ठ पुत्र श्री मनसाराम ने इस राजवंश के संस्थापक एवं प्रभावशाली यशस्वी शासक होने का महनीय गौरव प्राप्त किया, शेष तीनों अनुजों- दशाराम, दयाराम, मायाराम ने ज्येष्ठ भ्राता के शासन को सुदृढ़ एवं स्थायी बनाये रखने में अनुगामी सहयोगी के रूप में अपना-अपना विशेष योगदान दिया।

महाराजा बलवन्त सिंह (सन्-१७३९-१७७० ई.)- मनसाराम ने भवनों के क्षीण होते साम्राज्य के अन्तिम काल में जान-माल लूट लेने वाले क्रूर दस्युओं से अपनी राजनीतिक सूझबूझ एवं रण-कौशल द्वारा प्रजा की सुरक्षा की और इन अराजक तत्वों की गतिविधियों पर पूर्ण अंकुश लगाकर छिन्न-भिन्न शासन को सुदृढ़ करते हुए नवी राजवंश की स्थापना का श्रेय प्राप्त किया। मनसाराम की नन्दकुमारी नायक पत्नी से बलवन्त मिंह (बरिबन्ड सिंह) का जन्म हुआ, जिन्होंने अपनी

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

काशी/वाराणसी की संगीत परम्परा

शूरवीरता से जीते हुए भूखण्डों का पिता से भी अधिक विस्तार करते हुए गंगापुर से हटकर रामनगर को अपनी राजधानी बनाया और मन् १७४० ई. के आस-पास एक विशआल दुर्ग का निर्माण कराया। दुर्ग में पश्चिम ओर शिव मंदिर का निर्माण करा कर उसमें शिव लिंग की स्थापना की और सुयोग्य सन्तान होने की प्रतिष्ठा प्राप्त की। इस मंदिर के द्वार पर अंकित श्लोकों से महाराज की वंश परम्परा तथआ शासन क्षेत्र का संकेत मिलता है। काशी नरेश पुस्तकालय में उपलब्ध उर्दू ग्रन्थ, 'बलवन्त नामा' से राजा बलवन्त सिंह का जीवन-परिचय एवं शासनकाल का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। आपके दरबार के फलित ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान पं. परमानन्द पाठक ने रामनगर दुर्ग के मुहूर्त-शोधन का कार्य सम्पन्न कराया था। फलित ज्योतिष के उत्कृष्ट ग्रन्थ 'प्रश्नमाणिक्य-माला' के रचयिता पं. परमानन्द पाठक ही थे। महाराजा बलवन्त सिंह शौर्य सम्पन्न शासक के साथ-साथ धर्मनिष्ठ, संस्कृत्यनुरागी राजपुरूष थे। आपकी गुण-ग्राहकता से राज दरबार में सरस्वती, पुत्रों के पूर्ण आदर एवं सम्मान प्राप्त था, जिससे पं. परमानन्द पाठक एवं अनेक कवि तथा विद्वानों में सुप्रसिद्ध कवि रघुनाथ इत्यादि आपके दरबार में सुप्रसिद्ध कवि रघुनाथ इत्यादि आपके दरबार की शोभा बढ़ाते थे, जिनके द्वारा रचित 'काव्यकलाधर', 'रसिक मोहन', 'इश्क महोत्सव' आदि कृतियों की ठा. शिव सिंह 'सरेज' ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। काशी-राज, परिवार प्रत्येक क्षेत्र के विद्वानों को आदर एवं आश्रय देने में अग्रणी रहा।

महाराजा बलवन्त सिंह की प्रथम 'प्रतिप्राण' नामक पत्नी से दो पुत्र चेतसिंह और सुजान सिंह एवं द्वितीय पत्नी से एकमात्र कन्या का जन्म हुआ, जो दरभंगा के नरहन स्टेट के नरेश को ब्याही गई थी।

महाराजा बलवन्त सिंह ने अपने आश्रित कवि रघुनाथ को गंगा किनारे स्थित चौरा नामक ग्राम दान में दिया था। आपके समय में फारस के प्रसिद्ध फकीर शेख अली हजी नादिरशाह की क्रूरता से भयभीत एवं खिन्न होकर दिल्ली आये, किन्तु जल्द ही दिल्ली के अशान्तिमय वातावरण से ऊब कर काशी आए। महाराज बलवन्त सिंह ने उन्हें आश्रम एवं आदर सहित उचित स्थान प्रदान किया। काशी का शान्तिमय वातावरण शेखसाहेब को अत्यन्त रास आया और यहीं रहते हुए उन्होंने काशी नगरी की प्रशंसा में फारसी में शेर लिखा है। महाराज उन्हें भरपूर आदर देते थे। शेख साहब की मजार आज भी काशी में विद्यमान है। सनातनधर्मी होकर भी सभी धर्मों के प्रति पूर्ण आदर रखने वाले महाराज बलवन्त सिंह जी विलक्षण शासक थे। महाराज बलवन्त सिंह के राज दरबार में चतुरविहारी मिश्र, जगराज सुकुल, खुशहाल खाँ जैसे संगीत कलावन्त दरबार की शोभा बढ़ाते थे।

महाराजा चेत सिंह (१७७०-१७८१ ई.)- सन् १९७० ई. में महाराजा बलवन्त सिंह की मृत्यु के बाद उनके ज्येष्ठपुत्र चेत सिंह काशिराज की गद्दी पर आसीन हुए और मात्र १० वर्षों तक ही के शासनकाल में अपनी शूरवीरता और पराक्रम से प्रथम ब्रिटिश गवर्नर जनरल वारेन-हेस्टुग्ज को काशी पर आक्रमण करने के परिणाम स्वरूप समस्त काशीवासियों के विरोध के कारण, भयभीत होकर काशी से भाग जाने पर सजबूर कर दिया, जिसके पलायन की हड़बड़ी और घबराहट से सम्बन्धित एक कहावत आज भी प्रचलित है-

'घोड़ा पर हौदा, और हाथी पर जीन।
रातो रात भाग गया, वारेन हेस्टिंग्ज।'

महाराजा चेत सिंह की वीरता के ऐतिहासिक पक्ष के साथ उनकी धार्मिक निष्ठा, साहित्य प्रेम एवं सांगीतिक अनुशीलन की भव्यता का अवलोकन कराने वाली आपके दरबारी कवि श्री बलभद्र की नाना छन्दों में रची ११६६ पद्यों की उद्भुत रचना 'चेतसिंह-विलास' में प्राप्त होती है, जिसमें कवि ने राजा मनसाराम, बलवन्त सिंह, एवं चेत सिंह का जीवन-परिचय काव्य रूप में दिया है। साथ ही दरबार के अन्य सुप्रसिद्ध कवियों एवं विद्वानों का नामोल्लेख किया है। ज्योतिषी रंगनाथ, पुरोहित, देवभद्र, कवि रघुनाथ और उनके यशस्वी पुत्र कवि गोकुलनाथ एवं महाराज चेत सिंह के साहित्य-गुरू भोलानाथ मिश्र जिन्होंने महाराज का न केवल राज्याभिषेक कराया था, अपितु उन्हें शिक्षित और विनीत भी बनाया था, आदि विद्वानों

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

का विशेष रूप से उल्लेख किया है। राजगद्दी पर बैठने के कुछ दिनों उपरान्त उन्होंने काशी की पंचकोशी की यात्रा की, अपने पैतृक ग्राम गंगापुर गए, जहाँ के सुन्दर जलाशय का वर्णन कवि बलभद्र रचित 'चेतसिंह-विलास' में मिलता है। महाराज चेत सिंह के शासन-काल में दुलारी, कञ्जन, किशोरी, रूक्मणी, छित्तन बाई ने नृत्य-संगीत से दरबार जीवन्त था।

महाराज महीपनारायण सिंह (सन् १७८१-१७९६ ई.)- ब्रिटिश सरकार द्वारा महाराजा चेत सिंह जी को अभदस्थ कर दिये जाने के पश्चात् सन् १७८१ ई में महाराजा बलवन्त सिंह के दौहिज (नाती) महीपनारायण सिंह काशिराज की गद्दी पर सिंहासनारूढ़ किये गये। राज्य में व्याप्त अनुशासनहीनता, उच्छृङखलता, अस्तव्यस्तता को अपनी वीरता बुद्धि-चातुर्य एवं प्रशासनिक क्षमता से शीघ्र ही दूर कर अपनी कार्य-कुशलता का परिचय दिया। २१ मार्च सन् १७९१ ई. में काशिराज संस्कृत पाठशाला की स्थापना कर अपनी उदारता, विद्याप्रेम का परिचय दिया। इस पाठशाला के उचित देखभाल एवं संचालन के लिए मिर्जापुर जिले का 'सतासी परगना' दान दे दिया, जहाँ वर्तमान सम्पूर्णानन्द संस्कृति विश्व विद्यालय के नाना विभागों की कक्षाएँ निर्विघ्न चलती है। इस पाठशाला का भवन अपनी 'गाथिक

शऐली' की उद्भुत संरचना के लिए सुप्रसिद्ध है। महाराजा महीपनारायण सिंह की प्रशस्ति में ब्रह्मदत्त कवि ने अपने अलंकार ग्रन्थ 'दीप प्रकाश' में विस्तृत प्रकाश डाला है। अपनी वीरता, उदारता, विद्याप्रेम, धार्मिक निष्ठा एवं सांस्कृतिक चेतना से आप विद्वानों में अत्यन्त लोकप्रिय नरेश के रूप में विख्यात थे, जिसके कारण आपकी राजसभा में अपने-अपने क्षेत्र के सुदक्ष विद्वानों का जमघट लगा रहता था। आपकी संगीतानुरागी रूचि के कारण संगीत-सम्राट तानसेन के दौहित्र-वंश के विशिष्ट कलावन्त भूपत खाँ के पुत्र जीवन खाँ, मुगर दरबार से काशी आकर आपके राजाश्रय में थे, जिनकी संगीतसाधना, कला पर असाधारण अधिकार, कंठ-माधुर्य से राज दरबार की शोभा द्विगुणित हो उठी थी।

महाराज उदितनारायण सिंह (सन् १७९६-१८३५ ई.)- महाराज महीपनारायण के तीन पुत्र-उदितनारायण, दीपनारायण एवं प्रसिद्धनारायण थे। ज्येष्ठ पुत्र उदितनारायण सिंह सन् १७९६ ई. में महाराज महीपनारायण सिंह की मृत्यु के बाद काशी नरेश की गद्दी पर आसीन हुए। आप वंशआनुगत संस्कारों की प्रतिमूर्ति, संस्कृत विद्या के अनुरागी, धर्मनिष्ठ, गो, ब्राह्मण एवं संगीत के अत्यन्त रसिक नरेश के रूप में प्रसिद्ध थे। आपके राजाश्रय में काशी के प्रतिष्ठित महाराष्ट्रीय, ब्राह्मण, ज्योतिष शास्त्र के समस्त विभागों में पारंगत श्री बबुआ ज्योतिषी अत्यन्त प्रसिद्ध थे, किन्तु फलित ज्योतिष में आपकी विशेष प्रसिद्ध थी जिसके कारण काशी ही नहीं, अपितु देश के अन्य भागों से अनेक राजा, सम्भ्रान्त नागरिक भी आपकी प्रकाण्ड विद्वता से प्रभावित थे। आपके विषय में अनेक किंवदन्तियाँ प्रसिद्ध हैं।

१. एक बार ब्रिटिश सरकार द्वारा पदच्युत नेपाल के राजा ने आकर आपके द्वारा बताए शुभ मुहूर्त में नेपाल जाकर पुनः राज्यसत्ता प्राप्त की और वे अपने ऊपर लगये गए समस्त आरोपों एवं प्रतिबन्धों से भी मुक्त हो गए।

२. नवाब आसफुद्यौला के पुत्र वजीर अली ने आपके बताये मुहूर्त पर विश्वास नहीं किया और समय से पहले ही अंग्रेजों से युद्ध छेड़कर बुरी तरह से पराजित हुए।

३. एक बार एक भवन को आपने यात्रा करने के लिए सुहूर्त बताया। उसी मुहूर्त में उसने यात्रा की, रास्ते में बीमार पड़ गया। सकुशल यात्रा के लिए उसे एक खच्चर खरीदना पड़ गया। उसी से यात्र करते हुए अपना रोष प्रकट करने के लिए वह बबुआ ज्योतिषी के पास वापस लौटा और यात्रा की दुर्गति सुनाई। उसकी बातें सुनकर ज्योतिषी जी ने उस खच्चर की काठी फाड़ने का आदेश दिया। अत्यन्त प्रसन्नता मिश्रित आश्चर्य उस भवन को तब हुआ, जब उसी खच्चर

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

काशी/वाराणसी की संगीत परम्परा

की काठी की गदड़ी में से दो सौ स्वर्ण मुद्राएँ (अशर्फी) मिलीं। उसने बबुआ ज्योतिषी के चरणों पर अनेकों स्वर्ण मुद्राएँ रखकर शीश नवाया और स्वर्ण मुद्राओं को स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए क्षमा माँगी। सचमुच फलित ज्योतिष का ऐसा विद्वान् मिलना आज दुर्लभ है। आपकी वंश-परम्परा में भ्राता पं. बालकृष्ण काशिराज के राज ज्योतिषी थे। बबुआ ज्योतिष के पुत्र पं. जयराम एवं उनके पुत्र भाऊजी भी ज्योतिषशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् थे। आप सभी ने महाराजा काशिराज द्वारा वृत्ति और आश्रय प्राप्त कर प्रचुर यश एवं धन अर्जित किया। श्री बबुआ ज्योतिषी के परिवार में अनेक पीढ़ियों तक ज्योतिष-विद्या विराजमान थी।

श्री गोकुलनाथ भट्ट ने महाराज चेत सिंह महीपनारायण सिंह एवं उदितनारायण सिंह तीनों नरेशों की राजसभा को सुशोभित किया था। आप महाराज चेत सिंह के दरबारी कवि थे, जिन्होंने अपने आश्रयदाता चेत सिंह की कीर्ति को चतुर्दिक, फैलाने के लिए 'चेत चन्द्रिका' नामक उत्कृष्ट काव्य रचना की। कवि बलभद्र ने

अपने 'चेत सिंह-विलास चम्पू में इन्हें चेत सिंह का आश्रित कवि बतलाया है। बन्दीजन होने के कारण आप प्रातःकाल कमनाय पद्यों के उद्‌बोधन से काशिराज को जगाया करते थे। कवि गोकुलनाथ ने अपने पुत्र गोपीनाथ एवं शिष्य मणिदेव के सहयोग से संस्कृत महाकाव्य तथा लक्षस्लोकात्मक समस्त महाभारत एवं हरिवंश (महाभारत का परिशिष्ट) का २००० पृष्ठों में हिन्दी में वद्यानुवाद इतनी कुशलता से पूर्ण किया जो अनुवाद एवं रोचकता दोनों ही दृष्टि से प्रशंसनीय है। काशी नरेश महाराज उदितनारायण सिंह इस अभिनव ग्रन्थ के प्रकाशन में व्यक्तिगत रूचि लेकर उदारतापूर्वक लाखों रूपये व्यय कर हिन्दी-साहित्य-यज्ञ के अनुष्ठान में अपना विशेष योगदान दिया।

अपने युग के देश के गुणी गन्धर्व-नरेश के रूप मं संगीतकला क्षेत्र के विद्वानों के बीच उदितनारायण सिंह जी विख्यात थे, जिनकी छत्र-छाया में संगीत क्षेत्र के अनेक गुणी कलावन्तों ने ससम्मान राजाश्रय प्राप्तकर सतत साधन करते हुए इस कला को चरम-उतकर्ष प्रदान किया। टप्पा गायकी के आविष्कारक शोरी मियाँ एवं उनके पिता गुलाम रसूल एक लम्बे समय तक (चित्रा, इमाम बौदी के उस्ताद) महाराज उदितनारायण सिंह के दरबार में थे। सुर सिंगार नामक वाद्य के आविष्कारक एवं अद्वितीय रबाब वादक जाफर खाँ ने अपने सुर सिंगार नामक वाद्य का प्रथम वादन महाराजा उदितनारायण सिंह के ही राज दरबार में करके गुणग्राही काशी नरेश, अद्वितीय वीणावादक निर्मल शआह सरीखे विद्वानों को मंत्रमुग्ध कर अतिशय यश, धन तथा सम्मान प्राप्त किया। महाराज उदितनारायण सिंह जी की संगीतनिष्ठा एवं परख से लखनऊ राज दरबार एवं अन्य रियासतों के मूर्धन्य संगीत विद्वान भी काशी आते रहते थे, और काशिराज दरबार से समुचित आदर, सम्मान, धन प्राप्त करते थे।

महाराज ईश्वरीनारायण सिंह (सन् १८३५-१८८९ ई.) - महाराज उदितनारायण सिंह की मृत्यु के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र (जन्म १८२१ ई., मृत्यु १८८९ ई.) श्री ईश्वरीनारायण सिंह जी सन् १८३५ ई. में मात्र १४ वर्ष की उम्र में काशिराज की गद्दी पर बैठे और अपने ५४ वर्षों तक के राज्यकाल में आपने भारतीय विद्या, संस्कृत भाषा, साहित्य, धर्म एवं भारतीय संस्कृति के उन्नयन एवं विकास में अपना प्रचुर योगदान देकर काशिराज वंश की परम्परा एवं मर्यादा को चरम उत्कर्ष पर पहुँचाया। आपका शासनकाल काशी के लिए स्वर्ण युग था। उस समय काशी नगरी के वक्षः स्थल पर होने वाले प्रत्येक मर्यादित आयोजनें में काशिराज का योगदान सर्वप्रथम स्थान पर सभी को सर्वसुलभ था, वह आयोदन चाहे सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक चेतना के लिए हो अथवा प्राचीन परम्पराओं की सुरक्षा एवं मर्यादा के लिए हो, साहित्य अनुशीलन के लिए हो, काशीनरेश ईश्वरीनारायण सिंह का परोक्ष-अपरोक्ष रूप से वैचारिक, शीरीरिकस आर्थिक सहयोग अवश्य ही रहता था, जिससे उस आयोजन की गरिमा स्वयं बढ़ जाती थी। हिन्दी-साहित्य के अग्रणी भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी प्रायः आपके दरबार में आते रहते थे, जिनकी उदारता, दान-वीरता से महाराजा जी चिन्तित थे। एक बार ईश्वरीनारायण सिंह ने उन्हें अत्यन्त आत्मीयता एवं स्नेहसिक्त वाणी द्वारा उस ओर इंगित किया, कि व्यय पर अंकुश रखना आवश्यक है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

काशी/वाराणसी की संगीत परम्परा

हरिश्चन्द्र जी ने निश्छलतापूर्वक विनम्र वाणी में कहा, 'इस धन ने हमारे पूर्वजों को खा लिया, अब मैं इ से खा डालूँगा।'

ईश्वरीनारायण सिंह अत्यन्त गुणग्राही नरेश थे, जिससे राज दरबार में विद्वानों, गुणियों का जमघट रगा रहता था। दूर-दूर के विद्वान् आपके दरबार में आकर आदर-सम्मान प्राप्त कर सन्तुष्ट होते थे। विख्यात संत महात्मा काष्ठजिद्ध स्वामी को रामायणकी टीका लिखने के लिए प्रेरित किया और स्वयं ईश्वरीनारायण सिंह ने अपने आध्यात्मिक गुरू के द्वारा रचित ग्रन्थ 'रामसुधा' के ऊपर टीका लिखकर स्वामी जी के पदों की दुरूहता और उसमें आध्यात्मिक पक्षों को बड़ी सुन्दरता से उजागर कर अपनी विद्वता एवं शास्त्रप्रणयन शक्ति का परिचय दिया है। आपकी राजसभा में श्री ताराचरण तर्करत्न (लेखक-तर्करत्नाकर, सत्यनारायण कथआ, काननशतक), श्री प्रियनाथ तत्वरत्न (लेखक-तत्व-रत्नाकर, विरह-गीतिका, जयनारायण तर्क रत्न (लेखक-तर्करत्नावली), कृष्ण पन्त धर्माधिकारी जैसे उच्चकोटि के विद्वान् एवं संगीत क्षेत्र के मूर्धन्य कलावन्त जाफर खाँ, प्यारे खाँ (प्यार खा), बासत अली खआँ जैसे श्रेष्ठ कला साधक साशी नरेश महाराज ईश्वरीनारायण सिंह के दरबार की शोभा बढ़ाते थे।

महाराजा प्रभुनारायण सिंह (सन् १८८९-१९३१ ई.)- (जन्म सन् १८५५ ई मृत्यु सन् १९३१ ई.) आप सन् १८८९ ईं. में ३४ वर्ष की आयु में काशिराज की गद्दी पर बैठे और अपनी ७६ वर्षों की आयु तक में ४२ वर्षों तक अपने पूर्वजों की अक्षुण्ण धरोहर को सुरक्षित रखते हुए शासन सूत्र का पूर्ण मर्यादित ढंग से संचालन किया। आपके ही राज्यकाल में काशी राज्य एक स्वतंत्र रियासत के रूप में अस्तित्व में आया और भारत के प्रमुख स्वतंत्र नरेशों में आपकी गणना होने लगी। आप अपने पिता की ही भँति पण्डितों, गुणियो, विद्वानों के न केवल मात्र आश्रयदाता थे, अपितु काव्य प्रतिभा के धनी सुकवि भी थे। संस्कृत भाषा में समस्यापूर्ति के लिए महामहोपाध्याय पं. गंगाधर शास्त्री के कुशल नेतृत्व में प्रकाशित 'सूक्ति सुधा' नामक पत्रिका में महाराजा प्रभुनारायण सिंह जी की अनेक समस्या पूर्तियाँ अविरल प्रकाशित होती रहती थीं। आप संस्कृत नाटकों, विशेष रूप से 'अभिज्ञान-शाकुन्तल' के विशेष प्रेमी थे, जिसके अभिनय के लिए आपने रामनगर दुर्ग में 'शाकुन्तल-गृह' का निर्माण कराया और उस भवन की भित्तियों पर उपर्युक्त नाटक के अनेक मार्मिक एवं हृदयग्राही दृश्यों को कुशल चितेरों से चित्र अंकित कराया। आप स्वयं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे, जिसका जीवन्त परिचाय आप द्वारा रचित 'पार्थ-पाथेय' नामक अल्लाप्य के अवलोकन से मिलता है जिसमें आपने अपनी अद्भुत सरस कवित्वशक्ति का परिचय दिया है। आप संस्कृत-गीतों की रचना में भी अत्यन्त निपुण थे।

संस्कृत विद्या एवं भारतीय संस्कृति की उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने के महान उद्देश्य के लिए महामना पं. मदन मोहन मालवीय जि के लोकहित, समाजहित, देशहित के कल्याणर्थ स्वप्न को चिरस्थायी करने हेतु, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए हजारों एकड़ जमान दान स्वरूप सहर्ष प्रदान कर स्तुल्य एवं महनाय कार्य में अपना अद्भुत योगदान दिया। सन् १९२८ ई. में काशी में आयोजित अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष के रूप में आप द्वारा संस्कृत में दिया गया अभाभाषण अपनी गम्भारता, भाव प्रवणता एवं समस्त हन्दू समाज के उत्थान एवं अभ्युदयप्रापक उपायों का विशिष्ट मार्ग निर्देशक है। सन् १८८९ ईं. में आपको महारानी विक्टोरिया से 'लेफ्टिनेण्ट-कर्नल' की विशिष्ट उपाधि प्राप्त हुई। आपकी प्रशस्ति में काशी के भदैनी-विवासी पं. गणेशदत्त त्रिपाठी ने २८ सरस पद्यों में 'काशीश्वर-पुष्पांजलि' की रचना की। आपकी राजसभा में प्रधान सभा पंडित जीवन इस मैथिल, आपके दानाध्यक्ष ओवं स्निग्ध काव्य के पूर्ण पारंगत कवि थे, जिन्होंने सन् १९०२ ई. में सप्तम एडवर्ड के राज्याभिषेक पर 'श्रृंगार सागर' नामक आलंकारिक ग्रन्थ की रचना की थी। श्री जीवन झा काव्य कला के प्रवीण पारखी एवं पदरचना में पूर्ण निष्णात विद्वान थे। संगीत क्षेत्र में आपके समय के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों में आग्रगण्य विद्वान् उस्ताद वासत अली खाँ के पुत्र अली मुहम्मद ख़ाँ (बडकू मियाँ) नेपाल दरबार से काशी-नरेश महाराजा प्रभुनारायण सिंह के दरबार में सादर आये। प्रसिद्ध ध्रुपदगायक अलीबख्श, दैलत खाँ, मंजूर खाँ, बड़कू मियाँ के छोटे भाई मुहम्मद अली आदि विभिन्न राजदरबारों के श्रेष्ठ कलावन्तों के साथ काशी के धुरन्धर विद्वान् शिवदास-प्रयाग मिश्र, दरगाही मिश्र, मिठाईलाल मिश्र, रामसेवक मिश्र, रामगोपाल जी आदि से काशी

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

राजदरबार शोभायमान रहा।

महाराजा आदित्यनारायण सिंह (सन् १९३१ ई.-१९३९ ई.)- महाराजा प्रभुनारायण सिंह के एकमात्र पुत्र आदित्यनारायण सिंह को काशिराज की गद्दी पर बैठने का सुयोग मात्र आठ (८) वर्षों तक ही प्राप्त हुआ। अपनी वंशपरम्परा की मर्यादा एवं प्रशासन-कौशल से पिता द्वारा दिखाए मार्गों का अनुसरण करते हुए श्री आदित्यनारायण सिंह ने धार्मिक निष्ठा एवं सांस्कृतिक चेतना की ज्योति जगाए रखने में एवं काशी नगरी की गौरव-गरिमा बढ़ाने में अपना विशेष एवं उत्कृष्ट योगदान दिया।

महाराज डॉ. विभुतिनारायण सिंह (सन् १९३९ ई.-१९४९ ई) (जन्म सन १९२७ ई., मृत्यु सन् २००१ ई.)- महाराज आदित्यनारायण सिंह के बाद उनके उत्तराधिकारी के रूप में श्री विभुतिनारायण सिंह ब्रिटिश-शासन द्वारा सिंहामनारूढ़ किए गए। आपका जन्म ५ नवम्बर १९२७ ई. में हुआ। सन् १९३४ ई. में जब मात्र ८ वर्ष के थे महाराज आदित्यनारायण सिंह ने आपको अपना दत्तक-पुत्र बना कर आपकी शिक्षा-दीक्षा की विधिवत् व्यवस्था की, उचित आयु में आपका उपनयन-संस्कार सम्पन्न हुआ। जब आप मात्र १२ वर्ष के थे, महाराज आदित्यनारायण सिंह ने शिवसायुज्य प्राप्त किया श्री विभूतिनारायण सिंह के अल्पवयस्क होने के कारण काशीराज्य का शासन भार चार सदस्यीय समिति के कन्धों पर डाल दिया गया। पूर्ण वयस्क हो जाने पर सन् १९४७ ई. में आपको विधिवत् राजगद्दी प्राप्त हुई। राज्य के शासन सूत्र में सुधार की योजना का कार्यान्वयन चल ही रहा था, कि सन् १९४८ ई. राज्य का स्वतंत्र भारत में विलयन हो गया।

महामना मालवीय जी के सत्यपरामर्श से अजमेर के महाराजा कालेज में शिक्षा प्राप्त करने के लिए श्री विभूतिनारायण सिंह गए, जहाँ राजकुमारों के अनुरूप शिक्षा देने का विशेष प्रबन्ध था। वहाँ से शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय में एम.ए. की परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण की। वैदिक धर्म एवं संस्कृत, वाङमय के प्रति पूर्ण निष्ठा एवं सहज आदर आप में पैतृक संस्कार के रूप में विद्यमान रहा। संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार, संस्कृत विद्या की उन्नति एवं प्रतिष्ठा के लिए आपका सहज प्रेम एवं महत्वपूर्ण योगदान अनुकरणीय एवं शलाधनीय है। आप द्वारा स्थापित 'काशीराज-न्यास' के अंतर्गत अनेक धार्मिक कृत्यों का सम्पादन प्राचीन शास्त्रों, पुराणों के वैज्ञानिक संस्करणों का प्राप्त हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर किया गया, जिसके फलस्वरूप अब तक 'वामन पुराण', 'कूर्म पुराण' आदि अनेक ग्रन्थों का विमर्शात्मक संस्करण एवं उनके हिन्दी, अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित हो चुके हैं।

'वाराह पुराण' आदि के प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है। 'काशिराज न्यास' द्वारा 'पुराणम्' नामक षाण्मासिकी पत्रिका हिन्दी-अंग्रेजी में प्रकाशित होती है, जिसमें इतिहास-पुराणों से सम्बद्ध शोधपूर्ण लेख प्रकाशित होते हैं। उच्चस्तरीय लेखों एवं वैदुष्य से इस पत्रिका की अन्तराष्ट्रीय प्रतिष्ठा है। वर्तमान में काशी नरेश ने रामनगर दुर्ग में प्राचीन नयनभिराम, अलम्य, बहुमूल्य राजकीय कलात्मक वस्तुओं का एक सुन्दर संग्रहालय भी स्थापित किया है, जो आपकी कलात्मक रूचि का परिचायक है। 'काशिराजन्यास' के अतिरिक्त भी अनेक न्यासों की स्थापना करके आप द्वारा धार्मिक, औद्योगिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के उन्नयन एवं विकास के अनेक कार्य सम्पादित हो रहे हैं। आपने राजकुमार अनन्तनारायण सिंह को प्रथमतः देश के लब्धप्रतिष्ठ काशीस्थ विद्वानों के मार्गदर्शन में संस्कृत भाषा एवं साहित्य का विधिवत् शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त ही अंग्रेजी शिक्षा दिलवाई। मनुस्मृति के अनुसार पूर्वजों द्वारा प्रतिपालित मार्ग का अनुसरण करते हुए अपनी धार्मिक निष्ठा, सांस्कृतिक गरिमा, व्यक्तिगत अनुकरणीय चारित्रिक विशेषता के नैतिक संस्कारों से युक्त काशिराज विभुतिनारायण सिंह काशी के आधिष्ठाता काशी विश्वनाथ के प्रतीक रूप में धार्मिक साशी नगरी के निवासियों के मन-मस्तिष्क पर विराजमान रहें थे, जिनसकी अभिव्यक्ति आपके आगमन पर उद्घोषित 'हर-हर महादेश' के उच्च एवं पवित्रतम अभिवादन से प्रकट एवं परिलक्षित होता रहा। शताधिक वर्षों से अनवरत चली आ रही रामनगर की

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

काशी/वाराणसी की संगीत परम्परा

विश्वप्रसिद्ध रामलीला की परम्परा का अत्यन्त श्रद्धा, निष्ठा, आदर एवं पूर्ण वैभव के साथ प्रतिवर्ष सम्पादन आपकी धार्मिक प्रवृति का जीवन्त उज्जवल प्रतीक थे।

आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की मानद उपाधि से विभूषित महाराजा विभूतिनारायण सिंह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चानसलर एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कलाधिपति एवं अनेकों गरिमामयी संस्थाओं के पिरतिष्ठित पद की मर्यादा को गौरव प्रदान किये। काशई की प्राचीन सांगीतिक धरोहर की परम्परा को स्थापित्व प्रदान करने हेतु एवं उसकी उचित शिक्षा के लिए काशी के मूर्धन्य कलाकारों का सहयोग प्राप्त करने के लिए आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय अन्तर्गत संगीत-कलीसंकाय की सांगीतिक गतिविधियों को निरन्तर गतिमान बनाये रखने के लिए संगीतपीठ (चेयर) की न केवल ठोस योजना का सत्परामर्श अपितु काशिराजन्यासकोष से आर्थिक सहयोग भी प्रदान की, जिसके अन्तर्गत काशी के वयोवृद्ध विद्वान् गायक पं. महदेवप्रसाद मिश्र का चयन कर आपने अपने योग्यता का परिचय दिया। उसी पद पर पुनः काशी की लोकप्रिय गायन शैली से विश्व के अनेक देशों में अपनी मनमोहक गायकी की अमिट छाप अंकित कर देने वाली विशिष्ट गायिका श्रीमती गिरिजा देवी का नाम प्रस्तावित कर आपने सभी को प्रमुदित कर दिया।

प्राचीन ध्रुपद गायन शैली की लुप्त होती जा रही प्राचीन परम्परा को पुनर्जीवित एवं जनमानस के बाच पुनः लोकप्रिय बनाने एवं उसके अन्नयन तथा विकास के लिए प्रति वर्ष 'ध्रुपद मेला' के आयोदन की परिकल्पना में अपनी ओर से आर्थिक सहयोग प्रदान कर आपने अपनी सांस्कृतिक निष्ठा का न केवल परिचय दिया, अपितु एक महनीय एवं स्तुल्य कार्य किया। देश के शीर्षस्थ वयोवृद्ध, ध्रुपद गायकों एवं परवावज वादकों में से प्रतिवर्ष एक-एर विद्वानों को 'ध्रुपदमेला-समारोह' के अवसर पर सम्मानित कर नकद धन राशि अंग वस्त्रम् के साथ सार्वजनिक सम्मान करने की अभिनव, स्वस्थ परम्परा काशीनरेश श्री विभूतिनारायण सिंह ने डालकर इस नगर की सांस्कृतिक गरिमा को गौरवान्वित करने में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। उधर अनेक वर्षों से रामनगर दुर्ग में प्रति वर्ष होली के पश्चात् 'बुढ़वामंगल' संगीत गोष्ठी के प्रतीक स्वरूप सुन्दर आयोजन करके भाग लेने वाले कलाकारों का उचित आदर एवं सम्मान कर आपने संगीत विद्या एवं कला के प्रति उचित आस्था का परिचय दिया था।

सारांश यह है कि प्राचीन भारतीय आदर्श परम्पराओं के आस्थावान् काशीनरेश विभूतिनारायण सिंह अन्य नरेशों के रहन-सहन, वेशभुषा, खान-पान, नैतिक चरित्र, विचारधारा से सर्वथा भिन्न एवं विशुद्ध भारतीयता के आदर्श थे। काशी नगरी अपने प्रारम्भिक-काल से ही विभिन्न वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म, जाति, भाषा, साहित्य, संगीत, कला के साधकों, चिन्तकों, विद्वानों, संस्थापकों, धर्माचार्यों की प्रिय नगरी रही है। यहाँ विश्व-प्रसिद्ध विभिन्न पवित्र मंदिरों के साथ ही मस्जिद, गिरजाघर, सुरूद्वारा, जैन, बौद्ध आदि सभी धर्मावलम्बियों के विशेष धार्मिक स्थल, अवशेष, पीठ, स्तूप, स्मारक, संग्रहालय आदि अपनी प्राचीनता, पवित्रता एवं स्थापत्य कला के लिए विश्वजनीन है। बिना किसी भेदभाव के सभी धर्म की अनुयायियों के साथ परस्पर सौहार्द के साथ जीने के सिद्धान्त में विश्वास रखने वाली यह नगरी अपने आप में सम्पूर्ण देश की संस्कृति की जीवन्त प्रतीक 'लघु भारत' के रूप में विख्यात रही है, जहाँ सम्पूर्ण भारत के विभिन्न प्रान्तों के अतिरिक्त विदेश यात्री भा आकर बनारसी शैली में जीवन की मौजमस्ती की अविरल बहने वाली गंगा में डुबकी लगाकर जीवन को धन्य करते हैं।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति, आचार-विचार, धर्म संप्रदाय, साहित्य, कला-सम्मान का अभिनव आदर काशी-विसियों की अपनी निजी मौलिकता तथा जीवनशैली की विशेष पहचान है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, धार्मिक संस्कारों की पवित्रता के लिए इसे मक्का, यरूशलम से भी पवित्रतम प्राचीन नगर की श्रेणी में रखा गया है। आज आधुनिक परिवेश में भले ही जीवन शैली में विभिन्न बदलाव आ गए है, आधुनिकता की चकाचौंध से उच्छृंखलता, शोखी, चंचलता की प्रचुरता से, प्राचीन परम्परा, सामाजिक शिष्टाचार, भूलुंठित हो रहे हो, किन्तु मन, वचन, कर्म, वेशभूशा, संस्कार से आजीवन काशईवासी बने रहने वालों के मन में आज भी अपनी मर्यादा की पुनरावृत्ति की आशा हौ, जिससे काशी नगरी सदियों से

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

गौरवान्वित रहीं है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.